चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.8.22	4	5.8

चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी : वीसी

कहा,पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित हो

भास्कर न्यूज | हिसार

पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है।

एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुधियाना व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों, प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं।

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रोद्यौगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	28.8.22	2	1-3

पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी: प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 अगस्त (ब्यूरो): पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है।

पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है, जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एन.डी.आर.आई., करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है।

उन्होंने धान व गेंहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले।

नोडल ऑफिसर 'निआफट्टा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरीड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	28.8.22	5	1-4

11 प्रतिशत हरे चारे व 23 प्रतिशत सूखे चारे की कमी

जागरण संवाददाता, हिसार: पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने चारे की कमी की तरफ विज्ञानियों का ध्यान आकर्षित किया। वह चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने के लिए चारा संसाधन विकास योजना के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि जानकारी दे रहे थे।

कार्यशाला में एचएयू, लुवास व एनडीआरआइ, करनाल के विज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। झांसी स्थित भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे।

एचएयू ने कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए। • एचएयू

गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं का दूध हो रहा कम

कुलपति प्रो. कांबोज ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है।

एचएयू ने चारे की 51 किस्में की विकसित

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की है। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त है जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28.8.22	5	1-5

पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 अगस्त (विरेंद्र वर्मा) : पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तायुक्त चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेंहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफ्टा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	28.8.22	3	2-8

देश में चारे की 29% कमी, मांग व आपूर्ति के अंतर को खत्म करना होगा : कांबोज

कुलपति कांबोज ने 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित कार्यशाला में रखे विचार

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए अभी से जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशु चिकित्सा विभाग के चिकित्सकों व रीजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

लगातार बढ़ता जा रहा है मांग व आपूर्ति के बीच का अंतर

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकी के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेहूं के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

चारा अनुभाग ने अभी तक 51 किस्में विकसित की

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकी के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	28.8.2022	--	--

पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

प्रवीन कुमार

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तायुक्त चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु ड्राफ्ट संसाधन विकास योजनाओं के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेहूं के फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर [illegible] डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, सतीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	27.8.2022	--	--

पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर समाप्त करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उत्तम गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चन्द्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल अधिकारी 'मिलाफवा' डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिन्दल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया।

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, सतपाल, पी. कुमारी, रविश पंवार, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	27.8.2022	--	--

पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर समाप्त करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उन्नत गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में अहम कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल अधिकारी 'निकरा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया।

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रवीश पंवार, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	27.8.2022	--	--

हकृवि में हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत कार्यशाला का आयोजन

पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तायुक्त चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेहूं के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचलित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निजात पा सकेंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की है। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में जई, लोबिया, ज्वार, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त है जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक है। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफाड', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महा निदेशक डॉ. [illegible] सिंह व महा निदेशक (पशुपालन) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया।

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभाटा	27.8.2022	--	--

गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक : कुलपति

हिसार/ 27 अगस्त/ रिपोर्टर

पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। यह शब्द चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि कहे। इस कार्यशाला में हकृवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेंहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रोद्यौगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	26.8.2022	--	--

कपास में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए सामूहिक प्रयास करने की जरूरत: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 26 अगस्त : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित मध्य-मौसम समीक्षा बैठक को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा पंजाब और राजस्थान सहित हरियाणा और आसपास के राज्यों में कपास पर गुलाबी सुण्डी का व्यापक प्रसार चिंता का विषय है जिसको सामूहिक प्रयासों से नियंत्रित किया जा सकता है। पिछले साल हरियाणा के 14 कपास उत्पादक जिलों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप देखा गया था। पंजाब के बठिंडा और मानसा जिलों में और राजस्थान के हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में बीटी कपास पर गुलाबी सुण्डी की घटनाओं की रिपोर्ट उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त इस माह से रेतीली मिट्टी में उगाई गई कपास की फसल में पोषक तत्वों की कमी शुरू हो गई है। किसानों को जरूरत के हिसाब से पोषक तत्वों की कमी पूरी करनी चाहिए। इस समय गुलाबी सुंडी की निगरानी के साथ पोषक तत्वों के प्रयोग पर ध्यान देने की बहुत जरूरत होगी। उन्होंने उम्मीद जताई है कि यह समीक्षा बैठक कपास की फसल में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी के प्रकोप और कपास की पत्ती मरोड़ वायरस रोग के प्रबंधन के लिए कारगर साबित होगी। बैठक में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने हरियाणा राज्य में उगाई गई नरमा फसल की वर्तमान स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की जबकि पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार और राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान, गंगानगर के वैज्ञानिक डॉ. रूप सिंह मीणा ने अपने-अपने राज्यों में नरमा फसल की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सिरसा के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने हरियाणा में कपास के क्षेत्रफल, उत्पादन, विभिन्न बीजों की बिक्री एवं गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन के लिए किए गए प्रयासों से अवगत कराया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र, सिरसा के क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ. एस.के. वर्मा ने गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन के लिए किए गए प्रयासों एवं उत्तरी भारत में नरमा में अच्छे उत्पादन हेतु रणनीति प्रस्तुत की। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से नरमा फसल के अच्छे उत्पादन हेतु किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी कपास फसल के लिए उनके द्वारा किए गए प्रचार-प्रसार के कार्यों से अवगत करवाया। बैठक के अंत में कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार यादव ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया। मंच का संचालन सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव ने किया।